सफलता की कहानी

प्रबल इच्छा शक्ति से इच्छापुर गांव में बहती है दूध की गंगा

खरगोन जिले से 20 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है इच्छापुर गांव । 2000 लोगों की जनसंख्या वाले इस गांव में 150 परिवार रहते हैं जिनमें से अधिकांश सक्रिय रूप से दुग्ध व्यवसाय से जुडे हुए हैं। दुग्ध सहकारिता में प्रबल विश्वास रखने वाले इस गांव के लोगों ने वर्ष 1988 में दुग्ध सहकारी समिति इच्छापुर का गठन किया तथा दुग्ध समिति को दूध प्रदाय करना शुरू किया। प्रारंभ में इस संस्था ने 56 सदस्यों के माध्यम से दुग्ध संकलन शुरू किया । आज इस संस्था के 122 सदस्य हैं तथा अंशपूंजी रूपये 2050 से बढ़कर रू. 43300 हो गई है।

इच्छापुर ग्राम में लगभग 200 दुधारू गाय, 200 भैंस तथा 25 संकर गाय व 20 संकर भैंसें है। इनसे प्रतिदिन 800 लीटर दूध का उत्पादन गांव में होता है जिसमें से 600 लीटर दूध समिति सदस्यों द्वारा दुग्ध सहकरी समिति के माध्यम से इंदौर दुग्ध संघ को भेजा जाता है।

दुग्ध उत्पादको की बढ़ती रूचि व सक्रिय भागीदारी से निरंतर प्रगति कर रही इच्छापुर दुग्ध समिति नें वर्ष 2008–09 तक अपने सदस्यों को लगभग 6.50 लाख रूपये बोनस के रूप में वितरित किये हैं। दुग्ध समिति ने 1.25 लाख रूपये की लागत से समिति भवन का निर्माण कराया है तथा आचार्य विद्यासागर योजना एवं राष्ट्रीय महिला कोष से रूपये 5 लाख की 40 गाय तथा रूपये
4 लाख की 40 भैंसें सदस्य दूध उत्पादको को उपलब्ध कराई है। भारतीय स्टेट बैंक खरगौन शाखा के सहयोग से डेरी प्लांट एवं वेन्चर केपिटल योजना के अन्तर्गत 500 दुधारू पशुओं का खरीदने के लिये 80 लाख का ऋण भी समिति सदस्यों को उपलब्ध कराया है। पशुओ के अच्छे स्वास्थ्य के लिये पूरे गांव के पशुओं का टीकाकरण एवं मॉस डिवर्मिंग किया गया है।

गांव के विकास में अपना योगदान सुनिश्चित करते हुए दुग्ध समिति ने पूरे गांव की सड़को पर मोरम डलवाने का कार्य किया है। दुधारू पशुओं के लिए पीने की पानी की व्यवस्था बनाये रखने के लिए पशु विकास निधि से पानी का हौज तथा गांव वासियों के बैठने हेतु ओटले के निर्माण में समिति ने रू. एक लाख खर्च किये है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दुग्ध व्यवसाय अपनाकर इच्छापुर गांव के लोगो ने दुध समिति के माध्यम से गांव के विकास में योगदान दिया है साथ ही अपनी आर्थिक उन्नती के लिये दुग्ध व्यवसाय को अपनाया है।